International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 7, November-December 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

विभाजन और उसके बाद की त्रासदी

कृष्ण लाल

सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान विभाग, के टी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रतिया, फतेहाबाद

सारांश

वर्तमान पेपर का उद्देश्य भारत और पाकिस्तान के विभाजन से उत्पन्न शारीरिक और मनोवैज्ञानिक आघात का विश्लेषण करना है, जहां एक राष्ट्र को दो भागों में विभाजित किया गया था, जो उन नागरिकों पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ रहा था, जो मौत, क्रूरता और बेघर होने के लिए अभिशप्त थे। आज़ादी, साहित्य _ अकादमी पुरस्कार चमन द्वारा लिखित उपन्यास नाहल को शोध विषय की जांच के लिए चुना गया है। विभाजन की त्रासदी सामूहिक हत्याओं, दंगों और हिंसा पर ही नहीं रुकी, बल्कि मनोवैज्ञानिक स्तर पर इसका व्यापक, कभी कम न होने वाला प्रभाव था। आजादी का सबसे प्यारा सपना टूट गया

कुंजी शब्द: *विभाजन, इतिहास, उखड़ा हुआ, नरसंहार, हिंसा, सामूहिक अनुभव।*

How to cite this paper: Krushnalal "Partition and its Aftermath" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-7, December 2022, pp.1085-1089, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52568.pdf

IJTSRD52568

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

भारत और पाकिस्तान का विभाजन, भारत के इतिहास की शायद सबसे दर्दनाक घटना है, इंसानों के भीतर छिपी क्रूरता को दर्शाती है, इंसान में अभी भी जानवर जैसी आदिम प्रवृत्ति है। आज भी बंटवारे के जख्म भरे नहीं हैं। इस त्रासदी को हुए पचास वर्ष से अधिक बीत चुके हैं फिर भी यह भयानक घटना एक औसत भारतीय के मन को कचोटती है। डेनिंग टिप्पणी के रूप में: "इतिहास अतीत नहीं है; यह अतीत की चेतना है जिसका उपयोग वर्तमान उद्देश्यों के लिए किया जाता है। (डेनिंग, 170) वर्तमान अतीत के ताने-बाने से बनता है और भारत के रक्तरंजित अतीत को भारतीय अंग्रेजी उपन्यासकारों द्वारा फिर से बनाया गया है । " भारतीय स्वतंत्रता के आसपास की घटनाओं का आधुनिक भारतीय लेखकों और भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है।" (रेली, 22) शरद राजिमवाले ने विभाजन के संबंध में इसी तरह की पीड़ा को इन शब्दों में व्यक्त किया है:

हत्याओं, बलात्कारों, अपहरणों, लूटपाट और डकैती से, दक्षिण एशियाई आबादी विभाजन के कारण हुए मनोवैज्ञानिक घावों से पीड़ित है। यकीनन भारतीय विभाजन से पहले, बीसवीं सदी में लोगों का कष्टदायी प्रवासन नहीं था। (राजिमवाले, 197) विभाजन की त्रासदी सामूहिक हत्याओं, दंगों और हिंसा पर नहीं रुकी, लेकिन मनोवैज्ञानिक स्तर पर इसका बड़ा, कभी कम होने वाला प्रभाव नहीं था। आजादी का सबसे दुलारा सपना टूट गया:

बहुत सारे लोग जो विभाजन के आघात से गुजरे थे, वे यह समझने में असमर्थ थे कि कुछ सामान्य प्रतीकों और साझा आदर्शों के आधार पर बना एक राष्ट्र इतनी आसानी से कैसे खंडित हो गया। इतने अधिक लोग शायद ही समझ पाएंगे कि एक अखंड और धर्मनिरपेक्ष भारत का उनका सपना धार्मिक कट्टरता से क्यों नष्ट हो गया" (पी. राव 01)।

विभाजन की खबर से लाखों पंजाबी और बंगाली प्रभावित हुए। अपने पुश्तैनी घरों से उखड़े और बड़े पैमाने पर प्रवास के लिए धकेले गए ये लोग सबसे दयनीय थे। प्रवास के दौरान कितने लोगों की निर्मम हत्या की गई या कितनी असहाय महिलाओं को काफिले से अगवा किया गया, इसका वास्तविक आंकलन कभी नहीं किया जा सकता।

मनोहर मालगांवकर *ए बेंड इन द गंगा* (1962), चमन नाहल का *आज़ादी* (1975), खुशवंत सिंह की *ट्रेन टू पाकिस्तान* (1956) भीष्म साहनी का *तमस* (1988) ऐसे उपन्यास हैं जो जीवन के आघात को पुन: उत्पन्न करते हैं विभाजन। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन उपन्यासों के विषय समान होने के बावजूद इनका एक्सपोजर, संदर्भ और घटनाएं अलग-अलग हैं। जबकि *ट्रेन टू पाकिस्तान* भारतीय परिदृश्य, नाहल से संबंधित है *आज़ादी* उस स्थिति से संबंधित है जो विभाजन की ख़बरों से पाकिस्तान में पैदा हुई थी। नहल ने आजादी के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को एक ही सूत्र में पिरोया है। उपन्यास भारत पहुंचने के बाद नरसंहार, पलायन, यौन-हिंसा और शरणार्थियों की स्थिति को दर्शाता है। नाहल ने उपन्यास की आत्मकथात्मक प्रकृति को निम्नलिखित शब्दों में स्वीकार किया है: "... .. एक भजन के यथार्थवादी उपन्यास के बजाय अपनी जन्मभूमि के लिए। (नहल, 10)

सियालकोट, चमन में पैदा हुए विभाजन के बाद नाहल को भारत आने के लिए मजबूर होना पड़ा। नाहल ने इस उपन्यास के साथ निजी अनुभवों को सामूहिक रूप में विस्तृत किया है। उपन्यास:

यह केवल एक ऐतिहासिक घटना का पुनरावलोकन नहीं है बल्कि एक ऐतिहासिक युग का एक कल्पनाशील पुनरावलोकन है; यह अतीत के मुद्दे को उदासीन रूप से नहीं बल्कि आलोचनात्मक रूप से चुनता है; इसमें उपदेशात्मक और स्थितिजन्य तत्वों के साथ ऐतिहासिक का जानबूझकर संदूषण शामिल है; और, सबसे बढ़कर, इस उपन्यास में निजी अनुभवों को सार्वजनिक चेतना के लिए बहुत कुशलता से ऊपर उठाया गया है। (तक, 114)

उपन्यास परिदृश्य के दोहरे प्रतिनिधित्व के साथ खुलता है जो शांतिपूर्ण वर्तमान और आगामी तूफानी भविष्य है। लॉर्ड माउंटबेटन द्वारा भारत की स्वतंत्रता और विभाजन की घोषणा किए जाने की चिंता है। अनाज व्यापारी, लाला कांशीराम लेखक का मुखपत्र है और विभाजन की घोषणा पर लोगों द्वारा महसूस किए गए सदमे का भी प्रतिनिधित्व करता है। हिंदू महसूस करते हैं कि नेहरू ने उन्हें धोखा दिया है; तो अकालियों द्वारा सिखों को महसूस करो । बीबी के किराएदार जब अमरवती ने रेडियो पर विभाजन की खबर सुनी तो उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

वे डर से चकित थे:
यह क्या बकवास थी कि कोई दहशत नहीं, कोई हिंसा नहीं, सरकार से पूरी सुरक्षा, मुख्य उद्देश्य शांति! क्या वह पागल हो गया था? क्या वह अपने लोगों को नहीं जानता था? क्या वह मुसलमानों को नहीं जानता था? और पहले विभाजन क्यों? आप पंडित नेहरू हमसे क्या वादा करते हैं ? (आज़ादी, 65)

उपन्यास की शुरुआत में, नाहल ने जानबूझकर सियालकोट के शांतिपूर्ण जीवन, दो समुदायों के बीच सद्भाव और एकता और सबसे ऊपर लालकाशी राम के अत्यधिक स्थापित जीवन को चित्रित किया है। उनकी नियत दिनचर्या, गृहस्थी का सूक्ष्म और सुंदर चित्रण का विस्तृत विवरण दिया गया है जो विभाजन से पहले के जीवन को दर्शाता है और इससे उत्पन्न पीड़ा को बढ़ाता है। नाहल लिखते हैं:

लाला कांशीराम ने दरवाज़े से दूर तक देखा,... घर की शांति उन्हें कुछ दर्द के साथ आई... लगभग तीन दशकों से वे वहाँ रह रहे थे, और आज उन्होंने जो देखा वह सब उन्होंने और प्रभा रानी ने एक साथ रखा था थोड़ा-थोड़ा करके अपने स्वयं के प्रयासों से। कितना अच्छाई से भरा हुआ था यह सब कुछ! (अ. 34)

बंटवारे की खबर ने सारी शांति बहा दी। इधर लाला कांशीराम उन लाखों लोगों के प्रतीक हैं, जो अपने घर-जमीन से उखड़ गए। नाहल विभाजन के संबंध में इसी तरह के विचार देते हैं। जैसा कि वह टालता है, इस उपन्यास को लिखते समय वह था; "बड़े पैमाने पर यह दिखाने से संबंधित है कि कैसे 1947 में भारत के विभाजन ने एक मौजूदा सद्भाव को नष्ट कर दिया था जो सदियों से कायम था।" (नहल, बारहवीं) विभाजन की खबर फूटने से पहले, हिंदू, शिक और मुसलमान अपने बीच धार्मिक अंतर को महसूस किए बिना एक साथ रह रहे हैं। नाहल ने बरकत अली और लाला के बीच अनुकरणीय संबंध प्रस्तुत किया है कांशीराम और उनके बेटे मुनीर और अरुण । नाहल ने निम्नलिखित शब्दों में उनकी मित्रता का वर्णन किया है:

चौधरी बरकत अली लाला की ओर मुड़े कांशीराम और गंभीरता से बोले: तुम आज से मेरे भाई हो। लाला कांशी राम... था, उसे इस बात से अवगत कराने के लिए उसे किसी गांधी की आवश्यकता नहीं थी। (अ. 107)

भले ही एक धर्मपरायण मुसलमान, चौधरी बरकत अली एक हिंदू नेता, महात्मा गांधी की विचारधाराओं से बहुत प्रभावित थे और पूरी प्रतिबद्धता के साथ उन्होंने "घर में काती हुई कपास" खादी पहनी थी। इसी तरह मुनीर और अरुण अच्छे दोस्त के रूप में एक दूसरे की मदद करने में कभी असफल नहीं हुए। उनकी दोस्ती मामूली खेल से शुरू होती है और समय के साथ परिपक्व होती गई और एक मजबूत बंधन में बदल गई जिसे सांप्रदायिकता से तोड़ा नहीं जा सकता। खेलों में, अपने बचपन के दौरान, " अरुण ने मुनीर की रक्षा की जब वे भाग रहे थे और कोई और उनका पीछा कर रहा था। और जब मुनीर की बारी आई, तो अरुण ने चिल्लाकर उसे उत्साहजनक दिशा दी । (89)

मैत्रीपूर्ण वातावरण का एक अन्य वर्णन दशहरा उत्सव के उत्सव के विवरण के साथ दिया गया है। "यह एक हिंदू त्योहार था लेकिन पुतले मुस्लिम कामगारों द्वारा बनाए गए थे; पटाखे और आतिशबाजी भी मुसलमानों द्वारा आपूर्ति की गई थी। (94) एक अच्छी अर्थव्यवस्था चलाने के लिए दोनों समुदाय की आवश्यकता होती है। दूर-दराज के इलाकों में भी कई मुनीर और अरूण पाए जा सकते हैं जो कट्टरपंथियों से अप्रभावित हैं। बिना किसी पूर्वाग्रह के लाला कांशीराम को उनके हिंदू शिक्षकों ने उर्दू सिखाई थी। उर्दू, जो उन्होंने पहली भाषा पढ़ना और लिखना सीखा था। और जब लिखने की बात आई, तो चाहे उसकी दुकान के बहीखाते में प्रविष्टियाँ हों या सड़क के नीचे विक्रेता को एक नोट, उसने उर्दू में लिखा; "किसने कहा कि यह मुसलमानों की भाषा थी?" उन्होंने इसे अपने पिता और से सीखा था

प्राथमिक शिक्षक, दोनों में से कोई भी मुसलमान नहीं था।" (आजादी, 14) इस प्रकार विभाजन की खबर के साथ ही हिंदू-मुस्लिम के बीच चिरकालिक सौहार्द्र बाधित हो गया। हिंदू, सिख और मुसलमान अचानक अपनी धार्मिक-जातीय पहचान के प्रति सचेत हो गए। लाला कांशीराम जिन्ना के घोर आलोचक हैं। उन्हें इस बात का मलाल है कि बंटवारे की खबर सामने आने से पहले जिन्ना और नेहरू; "कम से कम अपना मुंह बंद रखना चाहिए और गरीब, विश्वसनीय लोगों को गुमराह नहीं करना चाहिए ।" (आजादी 210) लाला का तेवर विभाजन को रोकने में ब्रिटिश सरकार की विफलता के प्रति कांशीराम उस समय के अनेक भारतीयों की भावनाओं को प्रतिबिम्बित करते हैं। उनकी स्थिति का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया गया है:

आखिर क्या तोड़ दिया लाला ने प्रांत में शांति बनाए रखने के लिए जनरल रीस के तहत सीमा बल की अक्षमता कांशीराम का दिल था। एक

अंग्रेज कानून व्यवस्था रखने में असमर्थ!.... ऐसा
लग रहा था जैसे पश्चिम में सूर्य उदय हो रहा हो। (आजादी, 211)

नहल ने अत्याचार, हैवानियत और त्रासदी को दो स्तरों पर चित्रित किया है - व्यक्तिगत स्तर पर और सामूहिक स्तर पर। लेकिन अक्सर उपन्यास में व्यक्तिगत पीड़ित जन के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व होते हैं। अलग-अलग पाकिस्तान की घोषणा पर एक मुस्लिम उत्सव के साथ, सांप्रदायिकता से भरा मतलब सामने आया है:

"रात होने में देर थी कि बारात आई। भीड़ एक ट्रांसपोर्ट में थी, जो दहशत या हिस्टीरिया से अधिक थी... वे अपने रास्ते में अन्य मोहल्लों से गुजरे थे ,...। वे हिंदुओं को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते थे, कम से कम तो नहीं

आज ... लेकिन उन्हें उस स्वीकृति का अर्थ इन बनियों के लिए पर्याप्त रूप से स्पष्ट करना था, जो व्यापारी लंबे समय से शहर के व्यापारिक मामलों पर हावी थे" (73)

मोहल्ले में प्रदर्शन करने की अनुमति नहीं दी गई, तो पूरी भीड़ उन्मादी हो गई। "हम तुमसे कह रहे हैं, गेट खोलो!" और जुलूस के सिर से 'अल्लाह-ओ-अकबर' का एक विशाल रोना उठ गया ... जल्द ही आकाश 'अल्लाह-ओ-अकबर, अल्लाह-ओ-अकबर, अल्लाह-ओ-अकबर... अल्लाह-ओ-अकबर' की कई गूँज से भर गया । ओ ..." (74) आगे यह दृश्य अधिक उन्मत्त वर्णन के साथ आगे बढ़ता है जिसने हिंदू समुदाय में भय पैदा किया:

डुग की तुलना में जोर से और अधिक खतरनाक और जिसे ऊपर से स्पष्ट रूप से सुना जा सकता था, जिसमें कहा गया था, ' तोर दो! तोर दो!' 'इसे तोड़ो! तोड़ो इसे खोलो!' वे 'पाकिस्तान, ज़िंदाबाद ' के भी नारे लगा रहे थे। (77)

यह पूरा प्रकरण एक विडंबनापूर्ण मोड़ लेता है जब नगर निरीक्षक इनायत - उल्ला खान घटनास्थल पर आते हैं। अपना कर्तव्य निभाने के बजाय, वह सांप्रदायिक कारणों से भीड़ का समर्थन करता है। वह वास्तव में चाहता था कि भीड़ हिंदू मोहल्ले में अराजकता फैलाए। उनकी इच्छा थी कि भीड़ उनके घरों में आग लगा दे और उनकी संपत्ति लूट ले। दृश्य में अराजकता बढ़ रही है। वह सिख कांस्टेबलों और हवलदारों को बीम से गेट खोलने का आदेश देकर हिंदू और सिख को अपमानित करने की कोशिश करता है । लेकिन अंत में पूरी स्थिति को उपायुक्त ने अपने नियंत्रण में ले लिया।

उपरोक्त दृश्य उपन्यास में घटी घटनाओं के क्रम में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विभिन्न समुदायों के बीच अचानक कड़वाहट को प्रकट करता है। नाहल ने राजनीतिक नेताओं द्वारा मुस्लिम श्रमिक वर्ग में कट्टरता और रूढ़िवादिता का गंभीर रूप से लेखा-जोखा दिया है। अब्दुल गनी गरीब मुस्लिम जनता के प्रतिनिधि हैं जो मुस्लिम सांप्रदायिकतावादियों द्वारा आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। राव प्रसाद ने उपयुक्त टिप्पणी की है:

लीगर्स ने सफलतापूर्वक उन्हें 'स्वतंत्र भारत में खतरे से अवगत' कराया। उन्होंने उनके विचारों पर धावा बोलने में थोड़ी कठिनाई की, क्योंकि निरक्षर होने के कारण वे अपनी भूमि पर कार्य नहीं कर सकते थे, और वे बहुत भोले-भाले थे, जैसे कि मुस्लिम जनता के बहुत से गरीब लोग उनके नेताओं की वक्तृत्व कला से आसानी से बहक जाते थे। . (राव, 47)

विभाजन, व्यक्तिगत स्तर पर, विभिन्न संबंधों को प्रभावित करता है। पहले स्थान पर अरुण और नूर का मासूम रोमांस आता है जो अपनी पहचान के बंटवारे की खबर के साथ सांप्रदायिकता का शिकार हो गया, 'एक हिंदू' और 'एक मुसलमान' तक ही सीमित था।

अगस्त के अंत में, सीमा आयोग के पुरस्कार की घोषणा की गई और लोगों को भारत और पाकिस्तान की नई मौजूदा सीमाएँ स्पष्ट हो गईं। कोई भी समुदाय अपने हिस्से की जमीन से संतुष्ट नहीं था। सिक्खों ने अपनी उपजाऊ भूमि खो दी थी। मुसलमान " भारत को गुरदासपुर जिले के वर्गों के पुरस्कार पर नाराज थे, जिसने भारत को कश्मीर राज्य के साथ सटे सीमा के रूप में दिया"। (214) दो सरकारें दोनों देशों के अल्पसंख्यकों को परिवहन के लिए उचित व्यवस्था करने में विफल रहीं। लोगों को या तो स्थानांतरित करने के लिए छोड़ दिया गया था रेलगाड़ी से या काफिले से। परिवहन के दोनों माध्यमों को साम्प्रदायिकतावादियों ने जमकर निशाना बनाया। सामूहिक पलायन अक्सर सामूहिक हत्या में बदल गया क्योंकि निर्दोष लोग अपनी रक्षा करने में लाचार थे। कांशीराम निराश महसूस करते हैं: "दो नई सरकारें भ्रातृघातक युद्ध, और निर्वस्त्र पुरुष और महिलाएं कैसे और या पीड़ादायक वध कर सकते हैं?" (183-84) लाला और उनका परिवार सियालकोट से अमृतसर के लिए सीधा रास्ता चुनते हैं। लियोनार्ड उन क्रूर दंगों और हत्याओं की तस्वीर देते हैं:

अगस्त 1946 और अगले वर्ष के वसंत के बीच के नौ महीनों में, चौदह से सोलह मिलियन हिंदुओं, सिखों और मुसलमानों को अपना घर छोड़ने और खून से लथपथ भीड़ से सुरक्षा के लिए भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसी अवधि में उनमें से 6,00,000 से अधिक मारे गए थे। .... अगर वे बच्चे होते,

उन्हें उनके पैरों और उनके पैरों से उठाया गया था और उनके सिर दीवारों से टकरा गए थे। अगर वे बच्चियां थीं, तो उनके साथ बलात्कार किया गया और फिर उनके स्तन काट दिए गए। और यदि वे गर्भवती थीं, तो उनकी अंतडियां उखड़ गई। (मोस्ले, 9)

काफिला जहां भी जाता, वहां कत्लेआम के दिल दहलाने वाले दृश्य होते। पाकिस्तानी सेना की मदद से जानबूझकर पैदल काफिले पर हमला किया गया। युवतियों के साथ बलात्कार और अपहरण किया गया। महिलाएं और बच्चे आसान लक्ष्य होते हैं क्योंकि वे शारीरिक रूप से कमजोर होते हैं और आत्मरक्षा करने में असमर्थ होते हैं । स्मार्क स्वैन की टिप्पणी: "यदि आप साम्प्रदायिकता, जातीय संघर्षों, जातिगत संघर्षों और कट्टरवाद को करीब से देखते हैं, तो आपको पता चलेगा कि इसका कारण चाहे जो भी हो, पीड़ितों में ज्यादातर महिलाएं और बच्चे हैं।" (स्वेन, 12) नाहल ने अपहृत महिलाओं और उनकी दयनीय दुर्दशा की यथार्थवादी लेकिन सराहनीय सीमित तस्वीर दी है। हालाँकि, वह अभद्रता और विनम्रता के बीच एक बहुत पतली रेखा रखता है। महिलाओं का अपहरण कर लिया गया और उन्हें निजी संपत्ति के रूप में इस्तेमाल किया गया:

कई अपहृत हिंदू और सिख महिलाएं उनकी
हिरासत में थीं... एक अकेला मुसलमान ए
महिला को घसीट कर ले गया, और उसे अपने
विशेष उपयोग के लिए रखा। बाकी लोगों के साथ

सामूहिक बलात्कार किया गया... बलात्कार के
बाद अन्य अत्याचार किए गए... बचे हुए लोगों
को बार-बार बलात्कार और अपमान के लिए रखा गया,
जब तक कि उन्हें जर्जर मलबे में नहीं डाल दिया
गया। (आजादी, 293)

साम्प्रदायिक आक्रोश ऐसी बर्बरता को जन्म देता है और इस तरह की हैवानियत की पहली और आसान शिकार महिला बन जाती है। किसी ने ऐसी परेड को रोकने की कोशिश नहीं की। स्थानीय अधिकारियों, पुलिस और सेना ने ऐसी परेडों में हस्तक्षेप नहीं किया। अपहृत महिलाएं विश्वासहीन रहीं और परिवार द्वारा उनका स्वागत नहीं किया गया। परिवार के लोग ऐसी महिला को अपने साथ रखना गले लगाते हैं जो बेइज्जत थी। इन अभागी महिलाओं के पास और कोई चारा नहीं बचा था। उनमें से कई की मृत्यु हो गई क्योंकि भविष्य के पास उन्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है। दंगों और युद्ध के दौरान बलात्कार की दर बढ़ जाती है। ब्राउनमिलर महिलाओं पर हुए अन्याय के बारे में बताते हैं:

एक बार हम मूलभूत सत्य के रूप में स्वीकार कर लें कि बलात्कार नहीं है
तर्कहीन, आवेगी, बेकाबू का अपराध
वासना, लेकिन एक जानबूझकर, शत्रुतापूर्ण, हिंसक कार्य है
गिरावट और कब्जे और भाग का
of a विजेता होगा, डराने के लिए डिज़ाइन किया गया
और भय को प्रेरित करें... (ब्राउनमिलर, 324)

इस प्रकार, यह स्पष्ट हो जाता है कि नारी विजेताओं के लिए अपनी मर्दानगी का दावा करने का एक उपकरण बन गई

शक्ति ।
दिल्ली पहुंचने के बाद प्रवासी दूसरी मुसीबतें झेलने को मजबूर हैं. और इन मुद्दों को लाला के अनुभवों में चित्रित किया गया है कांशीराम और अरुण । पाकिस्तान से आए शरणार्थियों का स्वागत नहीं किया गया बल्कि उन्हें संदेह और घृणा की दृष्टि से देखा गया। ये लोग महीनों की कठोर यात्रा के बाद अपना सब कुछ खो कर भारत पहुंचे थे । फिर भी भारतीय अधिकारियों द्वारा उनके साथ बुरा व्यवहार किया गया। दिल्ली स्टेशन पर पुनर्वास अधिकारियों ने लाला के साथ दुर्व्यवहार किया कांशीराम और उनसे पूछा:

'दिल्ली क्यों? अधिकारी कठोर और दबंग था।'
'मैं यहां बसने की उम्मीद करता हूं'
'पूर्वी पंजाब में क्यों नहीं? तुम पंजाबी क्यों मुँह उठाकर दिल्ली की ओर कूच करते हो?' (341)

सहानुभूति और करुणा महसूस करने के बजाय, शरणार्थियों को भिखारी के रूप में माना जाता था। ध्यान देने योग्य बात यह है कि नव स्वतंत्र देश में भ्रष्टाचार का फैलाव देखा जा सकता है। एक निवासी, नौकरी या दुकान पाने के लिए संबंधित अधिकारियों को रिश्वत देना आवश्यक था। यहां नाहल ने भारत में शरणार्थियों की दिल पिघला देने वाली तस्वीर पेश की है। इन शरणार्थियों का रिश्तेदारों ने स्वागत नहीं किया। उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं बची है। यहां तक कि राजनेता भी शरणार्थियों को संगठित सहायता प्रदान करने में विफल रहे:

नेहरू के आवास के बाहर भारी भीड़ थी। पुलिस किसी को भी अंदर नहीं जाने देती थी। वह घंटों इंतजार करता था... यह कोई संगठित प्रदर्शन नहीं था; हर आदमी सिर्फ अपने लिए खड़ा था... 'क्या तुम अखबार नहीं पढ़ते? पंडितजी दौरे पर बंबई गए हैं,' एक पुलिस अधिकारी ने कहा। (345)

अरुण और लालकांशी राम ने दिल्ली में हर उस इलाके की तलाश की जहां वे किराए पर रह सकते हैं लेकिन असफल रहे। ' लाला

कांशीराम केवल इसलिए बदनाम महसूस कर रहे थे क्योंकि मांगी गई रिश्वत उनकी हैसियत से बाहर थी:

'वे करते हैं,' क्लर्क ने एक सुस्त मुस्कान के साथ कहा। ' एक हजार रुपये में आपको एक रिफ्यूजी फ्लैट मिल जाता है...'

'और एक दुकान?'

'हो सकता है एक और हज़ार हो,' क्लर्क ने बेपरवाही से कहा" (348)

मध्यम वर्ग के लोगों के पूरे वर्ग को बिना किसी गलती के अपनी मातृभूमि से खदेड़ दिया गया और अब भविष्य पूरी तरह से अंधकारमय था। नाहल द्वारा नितांत मूलहीनता का चित्रण किया गया है । लाला ने अपनी मर्यादा खो दी है और उन्होंने पगड़ी पहनना छोड़ दिया है। वह किंग्सवे कैंप में अपनी ईंट की झोपड़ी में एक गलाकाट प्रतियोगिता के दबाव में एक छोटी सी किराने की दुकान शुरू करता है । सुनंदा, जो विलासिता और गरिमा का जीवन जीती थी, के पास सिलाई के काम से आजीविका चलाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था।

उनकी अव्यवस्था और जड़हीनता ने उन्हें अंतहीन चुप्पी की ओर धकेल दिया था। लाला कांशीराम और उनके परिवार ने बातचीत का कारण खो दिया है। रात भर जागते रहते हैं फिर भी एक दूसरे से दर्द नहीं बाँट पाते।

वह इसके बारे में प्रभा रानी या अरुण से बात करना चाहता था । यह एक और बर्बादी थी जो आज़ादी ने की थी। उसने अपने परिवार के साथ संवाद करने की क्षमता खो दी थी। वह अपनी पत्नी या अपने बेटे के साथ संपर्क स्थापित नहीं कर सका। स्नेह वहीं था। चिंता वहीं थी। उनके प्रति उनका सम्मान भी था। फिर भी संपर्क टूट गया। कुछ ने उन्हें अलग कर दिया था। नहीं, वह उन तक नहीं पहुंच सका। (370)

भावनाओं के आदान-प्रदान के सिलसिले में परिवार के सदस्यों के बीच एक बहुत बड़ी खाई रह जाती है। अरुण भी कॉलेज और अन्य गतिविधियों में शामिल हुए लेकिन वे विभाजन के दुखों को नहीं भूल सके। वह अकेले रहना पसंद करता है, शायद ही वह किसी और के साथ घुलता-मिलता है। बासवराज नैखार ने उपयुक्त टिप्पणी की:

वे सभी एक प्रकार के अस्तित्वगत अकेलेपन से पीड़ित हैं... विस्थापन, भूमि, घर, जड़ों, दोस्तों और रिश्तेदारों की हानि, उनकी बेटी की मृत्यु और जल्द ही उनमें वैराग्य या वैराग्य की गहरी बैठी हुई हिंदू दार्शनिक भावना जागृत हो गई है ... (वह) अनुभव करता है आवश्यक आध्यात्मिक अकेलापन... (नाईकर, 59)।

इस प्रकार नाहल ने विभाजन के मनोवैज्ञानिक प्रभाव को कलात्मक रूप से प्रतिबिम्बित किया है। स्वतंत्रता न केवल अपने साथ नरसंहार, हिंसा, क्रूरता लेकर आई, बल्कि अलगाव, अलगाव और जड़हीनता भी लाई। उपन्यास के अंत में यह चित्रित किया गया है कि बिना कुछ किए जीवन शुरू करना कितना दर्दनाक होता है जब कोई पहले से ही चीजों को इकट्ठा करने और व्यवस्थित करने में अपना पूरा जीवन लगा देता है।

फिर भी, जैसा कि कई आलोचकों ने नोट किया है, उपन्यास के अंत में सकारात्मक नोट था। ओपी माथुर टिप्पणी करते हैं: आज़ादी भी गहरे मानवीय महत्व का कार्य है। इसके प्रमुख रंग - लाल और काले - और घटनाओं का चक्करदार चक्कर उपन्यास के माध्यम से लगातार जलते प्रेम और सहानुभूति के शाश्वत मानवीय मूल्यों की सफेद लौ और व्यक्तिगत कार्रवाई की आवश्यकता और फलदायीता के साथ समाप्त हो जाते हैं, जिसके साथ यह समाप्त होता है। (माथुर, 90)

निस्संदेह, नाहल का झुकाव 'कर्म' के भारतीय दर्शन की ओर है। मनुष्य का कर्म ही उसे परम मोक्ष की ओर ले जाता है। सुनंदा की मशीन का चक्कर इसी दर्शन के प्रतीक के रूप में पढ़ा जा सकता है। आघात कितना भी बड़ा क्यों न हो, जीवन का पहिया आगे बढ़ता रहता है।

संदर्भ:

[1] नाहल, चमन । *आज़ादी* । नई दिल्ली: ओरिएंट पेपरबैक.1988.प्रिंट।

[2] ब्राउनमिलर, एस. *अगेंस्ट अवर विल: मेन, वीमेन एंड रेप।* न्यूयॉर्क: साइमन एंड शूस्टर, 1975. झा, मोहन। " चमन नाहल का आज़ादी : पहचान की खोज" *तीन समकालीन उपन्यासकार* / एड। धवन, आरके नई दिल्ली: क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, 1985।

[3] झा, मोहन. " चमन नाहल का आज़ादी : पहचान की खोज" तीन समकालीन उपन्यासकार। एड। धवन, आरके नई दिल्ली: क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, 1985।

[4] माथुर, ओपी " चमन नाहल "भारतीय अंग्रेजी उपन्यासकार - आलोचनात्मक निबंधों का संकलन। मधुसूदन प्रसाद (संपा .). नई दिल्लीः स्टर्लिंग पब्लिशर्स।

[5] मोस्ले, लियोनार्ड। *ब्रिटिश राज के अंतिम दिन।* लंदन: वीडेनफेड और निकोलसन, 1961।

[6] नाईकर, बसवराज । " आज़ादी में विभाजन का आघात "। अंग्रेजी में आधुनिक भारतीय लेखन: महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाएँ। दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशन, 2009।

[7] राजिमवाले, शरद . "विभाजन, भाषा और भारतीय अंग्रेजी लेखक"। *अंग्रेजी में साहित्य में अध्ययन* / ईडी। रे, मोहित, के. वॉल्यूम। 14. नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशक, 2011।

IJTSRD International Journal of Trend in Scientific Research and Development ISSN: 2456-6470